IstP

वाद्य यंत्रों पर आलाप जोड़ झाला का महत्व :-

शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत राग संगीत का अधिक महत्व माना गया है जिसमें प्राय: आलाप, बंदिश, तान आदि की क्रियाएँ होती है आलाप में जहाँ राग के स्वरूप को विस्तारित कर किया जाता है। बंदिश स्वर, ताल, लय में निबद्ध सार्थक रचना को कहा जाता है। जिसमे गीति पद, कम्पोजिशन प्रबंध आदि विभिन्न नामों से जाना गया। स्वरों के गायन में स्थापित लय एवं लय की तुलना में दुगुन, चौगुन के गति से स्वरों के प्रवाह में उच्चारण को तान किया जाता है।

वाद्य यंत्रों पर बजाई जाने वाली ताल बद्ध रचनाएँ निबद्ध होती है जिसको गत एवं कम्पोजिशन कहा जाता है वाद्य यंत्रों में विशेषकर शैली की दृष्टि से मुख्यत: तत वाद्यों को आधार माना गया है। क्योंकि भारतीय संगीत मे तत वाद्य ही सर्वप्रथम विकसित वाद्य यंत्रों के रूप में सामने आया। और इस पर राग प्रस्तुति की अपनी तकनीक विकसित हुई। अन्य वाद्य बांसुरी, शहनाई, सारंगी, वायोलिन इत्यादि वाद्यों के बजाने की कोई अपनी शैली नही है ये सभी आवश्यकता अनुसार गायन के ही अनुशरण है।

Scanned with CamScanner

चूंकि वाद्य अंगों पर बजाई जाने वाली रचना निशब्द होती है इसलिए राग प्रस्तुती में आलाप की विभिन्न क्रियाओं को आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। अनालाप के पहले चरण में जहां मंथन गति से राग के स्वरों को क्रमशः खटका, जमजमा, कण, स्पर्श आदि अलंकारों को लेते हुए व्यक्त करते हैं वहीं जोड़ नामक आलाप की गति दुगुनी करते हुए विभिन्न स्वर खंडों को लेकर क्रमशः राग को विस्तारित करते हैं। जैसे राग तोड़ी में जोड़ आलाप का स्वरूप इस प्रकार है :

नि नि ध म, ध ध नि ध सा, रे रे सा रे रे ग रे रे सा,।

इसी क्रिया को चालु रखते हुए लय को दुगुनी कर अर्थात लय को द्रुत कर जब लय की गति का अनुसरण करते हुए किसी एक या दो स्वरों को स्पर्श करते हुए क्रम को बढ़ाते हैं उसे ही झाला की क्रिया कहते हैं।

जैसे :-

सासा सासा सासा सासा

सासा सासा सासा सासा

रेरे रेरे रेरे रेरे

शब्द विहिन वाद्य वादन के द्वारा राग प्रस्तुती को आकर्षक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए आलाप जोड़ एवं झाला का महत्व माना गया है।

Scanned with CamScanner